بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 13 मार्च 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(अमान महीने की तिथि 13,1405 हश)

तौहीद-ए-इलाही के तनाज़ुर में सीरते नबवी ﷺ का ईमान को बढ़ाने वाला तज़्किरा (वर्णन)।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-13.03.2026
محلہ احمدیہ قادیان پنجاب 143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहुज़ूर ﷺ की सीरत (जीवन परिचय) के हवाले से दो जुमअ: पहले मैंने आप स. की सीरत के पहलू तौहीद (एक मात्र इश्वर) के लिए तड़प का ज़िक्र किया था। यह वह मक़सद था जिसके कयाम के लिए आप स. आए और इसके लिए न केवल आप स. के अपने क़ौल ओ फ़अल (कथनी करनी) से तड़प का इज़्हार होता है बल्कि आप स. ने अपने सहाबा रज़ी. में, अपने मानने वालों में भी तौहीद के लिए हर कुर्बानी देने के लिए तैयार रहने की ऐसी रूह फूंकी जिसकी कोई मिसाल नहीं मिलती।

आज भी मैं आप स. की सीरत के उसी पहलू का ज़िक्र करूंगा और इस हवाले से कुछ सहाबियों की क़ुरबानी का ज़िक्र आ जाएगा।

एक बार मुशरिकों ने रसूलुल्लाह ﷺ से कहा कि क्या तुम हमारे मअबूदों (पूजनीय) के बारे में यह बात नहीं करते? आप स. ने फ़रमाया- हाँ। इस पर वे आप स. के चारों तरफ़ जमा हो गए। उस समय किसी ने हज़रत अबू बकर रज़ी से कहा कि अपने दोस्त की ख़बर लो। हज़रत अबू बकर रज़ी. निकल कर मस्जिदे हराम में पहुंचे। आपने रसूलुल्लाह ﷺ को इस हाल में पाया कि लोगों ने आप स. को घेरा हुआ था। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने कहा **اتقتلون رجلا ان یقول ربی اللہ وقد جاءکم بالبینت من ربکم** तुम्हारा बुरा हो, क्या

तुम इस लिए इस आदमी की हत्या कर दोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है? इस पर उन्होंने आंहज़रत ﷺ को तो छोड़ दिया और हज़रत अबू बकर रज़ी. की तरफ़ लपके और उनको मारने लगे। हज़रत अबू बकर रज़ी. की बेटी कहती हैं कि आप हमारे पास इस हाल में आए कि आप अपने बालों को हाथ लगाते थे तो वे आपके हाथ में आ जाते थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने बयान फ़रमाया कि एक बार आप स. बाज़ार से जा रहे थे तो मक्का के ओबाशों (आवारा लड़कों) के एक दल ने आप स. को घेर लिया और रास्ते भर आप स. की गर्दन पर यह कह कर थप्पड़ मारते चले गए कि लोगो यह वह शख़्स है जो कहता है कि मैं नबी हूँ। आप स. के घर में चारों तरफ़ से लगातार पत्थर फेंके जाते थे। आप स. के घर में गंदी चीज़ें फेंकी जाती थीं। रसोई वाली जगहों में भी गंदगी फेंकी जाती थी, लेकिन हज़ार हज़ार दरूद हों आप ﷺ ज़ाते बा बरकात पर कि तौहीद के क़याम के लिए जो तड़प आप स. के सीने में मौजज़न (ठाठे मारती) थी, वह कभी एक पल के लिए भी कम नहीं हुई, और इन सारी तकलीफों को मानो दिल की उमंगों के साथ बड़ी खुशी से कुबूल किया और फिर भी बनी नोअ इंसान (मानव जाति) से प्यार और मुहब्बत में तनिक सी भी कमी नहीं हुई।

हुज़ूर फ़रमाते हैं- एक बार आप स. मस्जिदे हराम में खड़े हुए और मक्का के मुशरिकों को मुख़ातिब (संबोधित) करते हुए फ़रमाया, तुम कहो ला इलाहा इल्लल्लाह, यानी अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं है, तुम कामयाब हो जाओगे, तो क़ुरैश आप स. पर टूट पड़े और हारिस बिन अबी हाला सबसे पहले आप स. के पास पहुंचे, हरिस ने आप स. को बचाने के लिए उन लोगों से लड़ना शुरू कर दिया और उन्हें रसूलुल्लाह ﷺ से अलग कर दिया, फिर वे सारे इन पर टूट पड़े यहाँ तक कि उनको शहीद कर दिया।

मक्का के काफिरों ने तीन साल तक आप स. को और आप स. के ख़ानदान वालों को शअब अबी तालिब नामक घाटी में इस तरह क़ैद रखा कि हर प्रकार का सोशल बाई-काट कर दिया गया। जब यह खत्म हुआ तो नबी अकरम ﷺ ने तौहीद का प्रचार पहले से बढ़ कर आम (सार्वजनिक) कर दिया।

आप स. ताएफ़ की यात्रा का भी मशहूर वाकिया है, वहाँ आप स. पर जो ज़ुल्म हुआ तारीख (इतिहास) में मुख्तलिफ़ हवालों से बयान हुआ है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने लिखा है कि जब शअब अबी तालिब का घेराव उठ गया तो आंहज़रत ﷺ ने इरादा फ़रमाया कि ताएफ़ में जा कर वहाँ के लोगों को इस्लाम की दावत दें। आप स. ने ताइफ़ में दस दिन कयाम किया और नगर के बहुत सारे रईसों से एक के बाद एक मुलाक़ात की, मगर इस नगर की किस्मत में भी मक्के की तरह उस समय इस्लाम लाना भाग्य में न था। आखिर आप स. ने ताइफ़ के रईसे आज़म (सबसे बड़े प्रधान) के पास जाकर इस्लाम की दावत दी, परन्तु उसने भी साफ़ इनकार कर दिया और कहने लगा, बेहतर होगा कि आप यहाँ से चले जाएं। इसके बाद उस बद-बख्त (दुष्ट) ने शहर के आवारा लोग आप स. के पीछे लगा दिए। ये लोग शोर करते हुए आप स. के पीछे हो लिए और आप स. पर पत्थर बरसाने शुरू किये, जिससे आप स. का पूरा शरीर खून से भीग गया। ताइफ़ से तीन मील की दूरी पर मक्का के एक मुख्या उत्बा बिन रबीअ: का बाग़ था। आंहज़रत ﷺ ने उसमे जाकर पनाह ली और ज़ालिम लोग थक कर वापस लौट गए। उत्बा ने अपने एक ईसाई गुलाम अदास के हाथ आप स. को एक प्लेट में अंगूर भेजे। आप स. ने अदास से उसका नाम पूछा

और कहा तुम कहाँ से हो? उसने कहा मैं नैनवा से हूँ। आप स. ने फ़रमाया- मैं तुम्हारी बस्ती में आने वाले नबी युनुस बिन मती का भाई हूँ। थोड़ी देर आंहज़रत ﷺ ने इस बाग़ में आराम फ़रमाया और फिर वहाँ से रवाना हुए।

फ़रमाया- आंहज़रत ﷺ तौहीद के क़याम के लिए मक्का में इन्फरादी और इज्तिमाई (एकाकी एवं सामूहिक) तबलीग़ का फ़रीज़ा अंजाम देते थे। अरब के बाजारों में चले जाया करते और वहाँ ख़ुदा-ए-वाहिद-ओ ला शरीक की तरफ़ आने का पैगाम देते। मक्का से बाहर कई जगहों पर लोग जमा होते थे उन्हें अस्वाक़ुल अरब कहा जाता था, उनमें उकाज़, मजन्ना और जुलमजाज़ नामक अरब के बाज़ार थे। हज़रत जाबिर रज़ी. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ हज के दिनों में उकाज़ और मजन्ना के मेलों में जाते और लोगों को घरों और कयाम गाहों में जाकर दावत देते। आप स. फरमाते- कौन है जो मुझे पनाह देगा? कौन है जो मेरी मदद करेगा ताकि मैं अपने रब का पैगाम पहुँचा दूं।

मक्का के क़ुरैश एक तरफ़ आंहज़रत ﷺ को इस्लाम की तबलीग़ से रोकने की कोशिश करते रहे और दूसरी तरफ़ इस्लाम कुबूल करने वालों पर ज़ुल्म और बरबिय्यत का वह बाज़ार गरम किया गया और ऐसा वहशियाना सलूक किया गया कि क़लम में उसको लिखने की ताक़त नहीं। हज़रत बिलाल रज़ी. ईमान लाए तो उनके मालिक ने उनको पकड़ कर ज़मीन पर लिटा दिया और उन पर कंकरियाँ और गाए की खाल डाल दी और कहने लगे कि तुम्हारा रब लात और उज़्ज़ा है, मगर आप रज़ी. अहद अहद (केवल एक रब) ही कहते थे, फिर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने आपको सात ओक़िया यानी 280 दर्हम में ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।

हुज़ूर फ़रमाते हैं- मक्का के कुरैश केवल मुसलमानों पर ही ज़ुल्म नहीं करते थे बल्कि रसूले करीम ﷺ की ज़ाते मुबारक (पवित्र अस्तित्व) भी किसी तरह बची हुई न थी। सबसे ज्यादा दुःख, पीड़ा और तकलीफ़ का सामना आंहज़रत ﷺ को करना पड़ा। आप स. का नाम मुहम्मद था, इस नाम को बिगाड़ कर मुज़म्मम कहा जाता यानी नऊज़ुबिल्लाह, सबसे ज़्यादा मज़म्मत (निंदा) किया जाने वाला। नऊज़ुबिल्लाह, आप स. को कज़्ज़ाब और झूठा कहा जाता, फ़रेबी, लालची और धोकेबाज़ कहा जाता, पत्थर मारे जाते और कभी गंदगी आप स. पर डाली जाती।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फरमाते हैं- मैं हमेशा तअज्जुब (आश्चर्य) की निगाह से देखता हूँ कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद स. है (हज़ार हज़ार दरूद ओ सलाम उस पर) यह किस आली मर्तबा का नबी है, इसके आली मक़ाम का इंतहा मालूम नहीं हो सकता और उसकी तासीरे क़ुदसी का अंदाजा करना इंसान का काम नहीं, अफ़सोस! कि जैसा हक़ शनाख्त का है, उसके मर्तबे के शनाख्त नहीं किया गया। वह तौहीद जो दुनिय से गुम हो चुकी थी, वही एक पहलवान है जो दोबारा उसको दुनिया में लाया। उसने खुदा से इन्तहाई दर्जे पर मुहब्बत की, और इन्तहाई दर्जे पर बनी नोअ की हमदर्दी में उसकी जांगुदाज़ हुई। इस लिए ख़ुदा ने जो उसके दिल के राज़ का वाक़िफ़ था उसको तमाम अम्बिया और तमाम अव्वलीन व आखिरीन पर फ़ज़ीलत बख्शी और उसकी मुरादें उसकी ज़िंदगी में उसको दीं। वही है जो सरचश्मा हर एक फैज़ का है और वह शख्स जो बगैर इक़रार अफ़ाज़ा उसके, किसी फ़ज़ीलत का दावा करता है, वह इंसान

नहीं है बलिक ज़ुर्रियत शैतान है, क्यूंकि हर एक फ़ज़ीलत की कुंजी उसको दी गई है और हर एक मअरिफ़त का ख़ज़ाना उसको अता किया गया। जो उसके ज़र्ये से नहीं पाता, वह महरूमे अज़्ली है। हम क्या चीज़ हैं और हमारी हक़ीक़त क्या है। हम काफ़िरे नेमत होंगे अगर इस बात का इक़रार न करें कि तौहीदे हक़ीक़ी हमने इसी नबी से पाई और जिंदा ख़ुदा की शनाख्त हमें इसी कामिल नबी के ज़र्ये से और इसके नूर से मिली है और ख़ुदा के मकालमात और मुखातबात का शर्फ़ भी, जिससे हम उसका चेहरा देखते हैं, इसी बज़ुर्ग नबी के ज़र्ये से हमें मयस्सर आया है।

फ़रमाया- उस आफ़ताबे हिदायत की शुआ धूप की तरह हम पर पड़ती है और उसी वक़्त तक हम मुनव्वर रह सकते हैं, जब तक हम उसके मुकाबिल पर खड़े हैं। वे लोग जो किसी ग़लत ख्याल पर जमे हुए हैं कि जो शखस आंहज़रत ﷺ पर ईमान न लावे या मुर्तद हो जाए और तौहीद पर कायम हो और ख़ुदा को ला शरीक जानता हो, वह भी निजात पा जाएगा और ईमान न लाने या मुर्तद होने से उसका कुछ भी हर्ज न होगा.......... निजात दो अमर पर मौक़ूफ़ है- 1- एक यह कि यक़ीने कामिल के साथ ख़ुदा तआला की हस्ती और वहदानियत पर ईमान लावे। 2- दूसरे यह कि ऐसी कामिल मुहब्बत हज़रते अह्दियत जल्ले शानुह की उसके दिल में जागुजीं हो कि जिसके इस्तीला और गलबे का यह नतीजा हो कि ख़ुदा तआला की इताअत ऐन उसकी राहते जान हो, जिसके बगैर वह जी ही न सके और उसकी मुहब्बत तमाम अग़यार की मुहब्बतों को पामाल और मादूम कर दे, यही तौहीदे हक़ीक़ी है कि बजुज़ मताबअत हमारे सय्यद-ओ-मौला हज़रत मुहम्मद ﷺ के हासिल नहीं हो सकती, क्यूंकि अक़्ल की दौड़ और सई सिर्फ इस हद तक है कि इस आलम की सनअतों पर नज़र करके सानअ की ज़रुरत महसूस करे, मगर ज़रुरत का महसूस करना और शै है और इस दर्जा ऐनुल यक़ीन तक पहुंचना कि जिस ख़ुदा की ज़रुरत तसलीम की गई है वह दर हक़ीक़त मौजूद भी है, यह और बात है..........पस यक़ीनन समझो कि तौहीदे यक़ीनी महज़ नबी के ज़र्ये से ही मिल सकती है.......पस हमें चाहिए कि आंहज़रत ﷺ के साथ सच्चा इश्क़ करें। इस ज़माने में अल्लाह तआला ने आंहज़रत ﷺ के ग़ुलाम सादिक़ को तौहीद के क़याम के लिए भेजा है और हमने आप अलै. की बेअत की है इस लिए हमें भर पूर कोशिश करनी चाहिए कि हम इसका हक़ अदा करने वाले हों। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे। उम्मते मुस्लिमा के लिए भी दुआ करें, यह भी हक़ीक़ी तौहीद को समझने वाले हों और उस पर अमल करने वाले हों।

अंत में हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रम अल्लाह तायो अय्यूब साहब मुरब्बी सिलसिला नाईजेरिया का ज़िक्र खैर और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا
مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ
اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ
وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131